Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2024

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में लैंगिक संबंध तथा परिवर्तनशील महिला प्रस्थिति

शेर सिंह कुड़ी [1]

[1] **(सहायक आचार्य), शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय.**

ABSTRACT:

भारतीय समाज एक पारंपरिक समाज है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति मुख्य रूप से पुरुष प्रधान रही है। समाज से जुड़े रीति-रिवाज व कार्यप्रणालियां पुरुष को प्राथमिक तथा महिला को द्वितीयक स्थान पर रखकर रची गई है,परिवर्तन के प्राकृतिक नियम के प्रभाव में समाज में भी व्यापक रूप से परिवर्तन दृष्टिगोचर होते रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सभ्यता और संस्कृति में अंतर्जात और बहिर्जात परिवर्तनों का क्रम देखने को मिला है। सामाजिक परिवर्तनों के कारण भारतीय समाज पूर्णतः पुरुष प्रधान परंपराओं पर आधारित नहीं रहा। समाज में महिला व पुरुष की भूमिका में व्यापक रूप से परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। भारतीय समाज की आधारभूत संस्था जैसे परिवार और विवाह में लैंगिक भूमिका में परिवर्तन का प्रभाव दिखाई दे रहा है। भारतीय ग्राम व शहर में महिला व पुरुष की पारिवारिक भूमिका व प्र3स्थिति तथा वैवाहिक संबंधों में पूर्व और वर्तमान में अंतर स्पष्ट रूप से देखा जाने वाला एक तथ्य है।

KEYWORDS:

सामाजिक वैचारिकी, लैंगिक असमानता, महिला प्रस्थिति, परिवर्तन, सुधार।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th February 2024	29th February 2024

लैंगिक अन्तर तथा ऐतिहासिक स्थिति

ऐतिहासिक स्रोतों से ज्ञात होता है महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समतुल्य रही। भारतीय समाज में महिलाओं को एक कमजोर समूह के रूप में जाना जाता रहा है। इतिहास के विभिन्न कालों में महिलाओं की स्थिति में उतार चढ़ाव रहा है, वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति तुलनात्मक रूप से उच्चतम थी। शिक्षा, संपत्ति, सार्वजनिक जीवन में भाग लेने का अधिकार महिलाओं को दिया हुआ था। उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी तथा शिक्षा, संपत्ति आदि अधिकारों से उन्हें वंचित किया जाने लगा। मनुस्मृति और नारदस्मृति में महिलाओं की तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक प्रस्थिति में गिरावट दृष्टिगोचर होती है। नकारात्मक वर्णन करने वाली कई संहिताओं में महिलाओं के प्रति सामाजिक भेदभावपूर्ण व्यवहार का उल्लेख मिलता है जिससे उन्हें कई अन्य बंधनों से जोड़ कर के देखा गया व नयी कुप्रथाओं का जन्म हुआ। एक प्रतिबंधित जीवन जीने के लिए महिलाओ को बाध्य किया गया। मध्यकाल में भी महिलाओं पर यह बाध्यता बनी रही और नारी के इतिहास में यह सबसे काला अध्याय बन कर उभरा, जिसमें कि महिलाओं को कई कुप्रथाओं का शिकार होना पड़ा। तत्पश्चात ब्रिटिश काल के अंतर्गत ब्रिटिश सरकार के उपनिवेश रहते हुए कुछ नए विचारों का आगमन भारत में हुआ। भारतीय समाज के नवीन प्रकार के विचारों से परिचित होने के कारण इसका एक सकारात्मक प्रभाव तत्कालीन सामाजिक वैचारिकी में प्रवेश किया। जिस क्षण हम पैदा होते हैं, लिंग के आधार पर जैविक अंतरों के अलावा, वस्तुतः कोई अन्य असमानता नहीं होती है। बच्चे, चाहे वे किसी भी लिंग के हों, समान रूप से मांग करते हैं - उन्हें विशिष्ट समय पर भोजन की आवश्यकता होती है, उन्हें सोने की आवश्यकता होती है, और वे अपने माता-पिता को समान रूप से चुनौती देते हैं - कुछ बार-बार जागते हैं, पेट में दर्द होता है, बहुत रोते हैं, और उन्हें गोद में उठाकर सुलाना पसंद होता है। हालाँकि, कम उम्र से ही, समाज लड़कों और लड़कियों के बीच अंतर पैदा करना शुरू कर देता है और हमें "उपयुक्त" भूमिकाओं में ढाल देता है, जिससे वयस्कता में हमारे अवसरों की नींव रखी जाती है। परिणाम यह भी हुआ कि भारत में कई धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुए। जिसके परिणाम स्वरूप भारत में अन्य सुधारों के साथ साथ महिला के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आना प्रारंभ हुआ। जिसमें मुख्य रूप से ब्रिटिश शिक्षाविदों, अधिकारियों और प्रशासकों और विदेशी शिक्षा की भूमिका रही। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय समाज सुधारकों ने महिलाओं की सहभागिता पर ज़ोर दिया जिसके परिणाम स्वरूप भी कई महिला नेतृत्व भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए और समाज के सामने एक उदाहरण पेश किया।

राजनीतिक सहभागिता बढ़ाने के साथ सामाजिक रूप से भी महिलाओं में जागरूकता का प्रचार प्रसार हुआ। महिला अधिकारों की बात सार्वजनिक मंचों पर होने लगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिला प्रस्थिति में सुधार के प्रयास और तेजी से किए जाने लगे। बहुआयामी प्रयासों के अंतर्गत भारत में संवैधानिक सुधार, सामाजिक कानून तथा विधान और जन कल्याणकारी योजनाएं बनाई जाने लगीं, जिसमें मुख्य रूप से महिला कल्याण और महिला सशक्तिकरण पर ज़ोर दिया गया। सामाजिक परिवर्तनों के अंतर्गत जो मुख्य रूप से महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने वाली प्रक्रियाएं थी, आधुनिक शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगीकरण, भूमण्डलीकरण और पश्चिमीकरण का विशेष योगदान रहा।

वर्तमान परिदृश्य और लैंगिक सुधार

वर्तमान भारतीय परिदृश्य में महिला का स्थान व स्तर परिवर्तनशील अवस्था में है, सामाजिक जीवन, आर्थिक संस्था, शैक्षिक संस्थान, सरकारी विभाग व निजी संस्थान, ग्रामीण व नगरीय समुदायों तथा कस्बों में भी महिला स्थिति में उल्लेखनीय अन्तर दृष्टिगोचर होते हैं। पिछली शताब्दी में लैंगिक समानता में विश्व के साथ-साथ भारत में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। तथापि आज भी समाज में लैंगिक भूमिकाओं में अन्तर स्पष्ट बना हुआ है, जिसका अर्थ है संयुक्त रूप से व्यवहार, दिखावा और दृष्टिकोण जो समाज किसी व्यक्ति के लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति के लिए अपेक्षित और उचित मानता है। उदाहरण के लिए, पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग व्यवसायों और जिम्मेदारियों का निर्धारण लैंगिक भूमिकाओं की परिभाषा के अंतर्गत आता है।

लैंगिक भूमिकाओं की समाजशास्त्रीय परिभाषा लैंगिक भूमिकाओं की उत्पत्ति और समाज में उन्हें कैसे बनाए रखा जाता है, इस पर प्रकाश डालती है।

भारतीय सामाजिक मानदंड यह सुनिश्चित करते हैं कि पुरुषों को यह नियंत्रित करना चाहिए कि किसी महिला को घर के बाहर काम करने की अनुमति है अथवा नहीं। घर में पारंपरिक लिंग भूमिकाओं पर सामाजिक मानदंड और विचार यह भी तय करते हैं कि पुरुषों को आर्थिक निर्णायक होना चाहिए और महिलाओं को बिना वेतन के देखभाल और घरेलू जिम्मेदारी का अधिकांश कार्य करना चाहिए। चूंकि महिलाओं से अभी भी वेतन के लिए काम करने की अपेक्षा की जाती है, ये मानदंड भुगतान और अवैतनिक काम का दोहरा बोझ डालते हैं, अधिकांशतः उन्हें श्रम से संबंधित नए विकल्प ढूँढने के लिए प्रेरित करते हैं जो घरेलू कर्तव्यों के साथ भुगतान किए गए काम को संतुलित करने के लिए बाध्य करते हैं।

परिणामस्वरूप, अवैतनिक पारिवारिक श्रमिक या स्वयं के खाते वाले श्रमिक महिलाओं के रोजगार का एक महत्वपूर्ण अनुपात बनाते हैं, जो उन्हें उच्च स्तर की भेद्यता के संपर्क में लाते हैं।

इस बीच, पुरुषों की तुलना में महिलाओं की शिक्षा का निम्न स्तर उनकी गुणवत्तापूर्ण नौकरियों और औपचारिक रोजगार तक पहुंच को सीमित करता है। भारतीय सामाजिक मानदंड और पूर्वाग्रह समाजीकरण के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते हैं, ये सामाजिक वैचारिकी का निर्माण करते हुए भारतीय महिलाओं को कुछ खास प्रकार के कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। गैर कृषि क्षेत्र में भी, ये पूर्वाग्रह महिलाओं को कुछ खास तरह के पेशे सौंपते हैं जिनमें सम्मान का अभाव भी पाया जाता है।

अनुसंधान पद्धति तथा शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर के अंतर्गत नगरीय झुग्गी झोपड़ी में लैंगिक भूमिका पर केंद्रित है।

शोध में प्राथमिक स्रोत से तथ्य संकलन हेतु अनुसूची के द्वारा उत्तरदाता से उत्तर प्राप्त कर शोध प्रकिया अपनाते हुए निष्कर्षों को पहुँचा गया है। प्रभावपूर्ण सामाजिक मानदंड और प्रथाएं भारत की महिलाओं और लड़कियों के लिए बड़ी बाधा के रूप में कार्य करती हैं। प्रस्तुत शोध के परिणाम बताते हैं कि बालिका विवाह और वधू मूल्य, असमान अंतर-घरेलू गतिशीलता - अवैतनिक देखभाल और घरेलू काम और निर्णय लेने के मामले में महिलाओं के खिलाफ हिंसा, प्रजनन स्वायत्तता, कृषि भूमि तक पहुंच, आंदोलन की स्वतंत्रता और न्याय तक पहुंच के क्षेत्रों में भेदभाव विशेष रूप से तीव्र है। इन भेदभावपूर्ण सामाजिक मानदंडों और महिला सशक्तिकरण के बीच की कड़ी जटिल और बहुआयामी है। शोध द्वारा मापे गए भेदभावपूर्ण सामाजिक मानदंड और दृष्टिकोण, भेदभावपूर्ण प्रथाओं के मूल में हैं। उदाहरण के लिए, महिलाओं के खिलाफ हिंसा की व्यापकता घरेलू हिंसा की उच्च सामाजिक स्वीकृति के साथ निकटता से जुड़ी हुई है, ये अंतर्निहित और छिपे हुए मानदंड और प्रथाएं, बदले में महिलाओं के लिए अधिक दृश्यमान परिणामों पर प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के लिए, बालिका विवाह की उच्च दर का किशोरावस्था में गर्भधारण में वृद्धि और महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्ति में कमी के संदर्भ में गहरा प्रभाव पड़ता है साथ ही, अंतर्निहित कारकों के अपने अंतर्निहित मूल कारण हो सकते हैं, जो भेदभावपूर्ण सामाजिक मानदंडों पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए, भेदभावपूर्ण विरासत प्रथाओं को परिवार के भीतर महिलाओं और पुरुषों की भूमिका की पारंपरिक धारणाओं के साथ-साथ पारंपरिक विचारों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है जो मानते हैं कि भूमि पुरुषों की है आर्थिक निर्णायक पुरुष हैं। इन मानदंडों और प्रथाओं का महिलाओं की दैनिक जीवन मे समानता तक पहुँच पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जो भारत जैसे देश में, जिसकी अर्थव्यवस्था काफी हद तक कृषि पर निर्भर है, महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण परिणाम डालता है। इसी तरह, घर के भीतर पुरुषों और महिलाओं की भूमिका के पारंपरिक विचार अवैतनिक भूमि के असंतुलित वितरण को दृढ़ता से निर्धारित करते हैं। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि परंपरागत भारतीय वैचारिकता में परिवर्तन की गति आधुनिकीकरण की प्रक्रिया होते हुए भी महिला प्रस्थिति के क्षेत्र में धीमी है जिसका प्रभाव महिलाओं को घरेलु कार्य के साथ बाहरी क्षेत्र में भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। यह मूल रूप से किसी भी समाज के दो सबसे मजबूत संस्थानों परिवार और धर्म की मान्यताओं को बदलने से संबंधित है। जिसमें सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हो सकते, निजी सहभागिता के साथ सामाजिक जागरूकता हेतु व्यावहारिक उपाय को ज़मीन स्तर पर लागू करने के प्रयास दीर्घकालिक रूप से करते रहने होंगे।

REFERENCES

1. Desai, A.R. and S.D, Pillai(1972). "A profile of an Indian Slum." Bombay: University of Bombay.

2. Devasia, L and Devasia, V.D. (1994). Empowering Women for Sustainable Development, New Delhi: Ashish.

3. Dhadave, M.B.(1989). Sociology of the Slum, New Delhi : Archives.

4. Directorate of Economics and Statistics (2005).

5. D'Souza, V.S.(1968). The Structure of a planned City – Chandigarh, New Delhi: Orient Longmans Limited.

6. Dubey, V.P. et al. (1999). Socio Economic Profile of Slum Dwellers in Chandigarh. Man & Development. Sept.

7. Fernandiz, W. (1991). Urbanization, Coping Mechanism and Slum Women's Status. Social Status Vol. 41, 382, Dec.

8. Kalia, Ravi(1987). Chandigarh: The Making of an Indian City, New Delhi: Oxford University Press.

9. Kalia. H.L.(2006). Women Work and Family. Jaipur and New Delhi: Rawat Publications.

10. Mishra, Arti (2004). Women in Slums (Impact of Environmental Pollution),New Delhi :Classic Publishing Co

11. Mohanty. L.N.P.and Mohanty Swati. (2005). Slums in India., New Delhi : A.P.H. Publishing Corporation.